

SHORT NOTICE QUESTION

Death of National Herald Reporter at Willingdon Hospital, New Delhi

+

S.N.Q. 30. SHRI KANWAR LAL GUPTA:

SHRI HARI VISHNU KAMATH;
SHRI BEDABRATA BARUA:

Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether the Government are aware of the report of the Hindustan Times dated 15th July, 1977 about the negligence of Willingdon Hospital authorities New Delhi, which led to the death of National Herald Reporter, Rajiv Nandra Jog;

(b) are Government also aware that his father Justice Prithvi Raj of Delhi High Court has also affirmed the inadequacy of medical aid by the authorities; and

(c) if so, what action Government have taken against the negligent doctors and what steps are proposed to be taken to avoid the recurrence of such incidents in future?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री
(श्री राज नारायण) : (क) जी हाँ।

(ख) जी हाँ। उन्होंने उसके बारे में मुझे सूचित किया था।

(ग) इस मामले की प्रारम्भिक जांच की गयी थी। चकि इससे कुछ प्रश्न अनुत्तरित रह गए हैं इसलिए इस मामले पर एक विस्तृत जांच कराने का मेरा विचार है।

श्री कंवर लाल गुप्त: विलिंगडन अस्पताल में जो व्यवस्था की गड़बड़ी है, किमिनल निगलैक्ट है उसका यह एक उदाहरण है। इस तरह के और भी अनेकों उदाहरण हमारे सामने आये हैं। इस केस में आपरेशन सुबह छः बजे किया गया जबकि मरीज रात के ग्यारह बजे कर

55 मिनट पर दाखिल हुआ था और उसकी स्थिति गम्भीर थी। आपरेशन भी जूनियर डाक्टरों ने किया। सीनियर डाक्टर देख कर चले गए। उन्होंने कोई काम नहीं किया। इसके अलावा जो पर्याप्त साइज की ट्यूब होनी चाहिए थी वह भी अस्पताल में नहीं थी। जस्टिस पृथ्वी राज जो हाई कोर्ट के जज हैं उनका यह—लड़का था। उनको उन्होंने कहा कि आप यह ट्यूब ला कर दो और यह बात उन्होंने सुबह साठ बजे कही। उन्होंने यह भी कहा—कि ब्लड की आवश्यकता है और ब्लड का स्पैसिफिकेशन भी गलत दिया। आपरेशन के बाद भी उस मरीज के पास कोई न डाक्टर था और न नर्स ही वहां मौजूद थी जब उसकी मृत्यु हुई। डॉ. एमरजेंसी बैन डाक्टर को बुलाने के लिए गई उसका ड्राइवर 35 मिनट तक गायब था। उसका एकसरे भी लिया गया। हालांकि उसकी स्थिति बहुत गम्भीर थी उसके पाक्जुड उसको उठा कर एमर के कमरे में ले गए। कोई मूविंग एक्सरे मशीन इस अस्पताल में नहीं है ऐसा मालूम होता है। मैं जानना चाहता हूँ कि इन सब चीजों को ध्यान में रखते हुए जो डिटेल्ड इनक्वायरी आप करा रहे हैं क्या वह इनक्वायरी तेज़ डाक्टर करेंगे जो इस अस्पताल के न हों और क्या इस बच्चे के पिता से मिल कर और सारी तफसील उससे हासिल करके इनक्वायरी करेंगे?

एमरजेंसी वार्ड की हालत भी बहुत खराब है। मुझे कई बार वहां जाने का मौका मिलता है। वहां टेलीफोन का इंतजाम भी ठीक नहीं है। वहां सीनियर डाक्टर होना चाहिये क्योंकि गम्भीर केस वहां आते हैं। दो दो महीने तक फोन खराब रहता है। क्या वहां सीनियर डाक्टर लगाएंगे और क्या वहां पर टेलीफोन आदि का उचित प्रबन्ध आप करेंगे?

श्री राज नारायण : माननीय सदस्य की फीलिण्ड के साथ मैं अपनी भावनाओं को भी जोड़ता हूँ। मैं भी जिस ढंग से इस बालक की मृत्यु हुई उससे बहुत दुखी हूँ। इस सदन की ओर से, सदन के सदस्यों की ओर से और अपनी ओर से मैं बालक के प्रति श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ और दुखी परिवार को अपनी तथा सदन की सहानुभूति भेजता हूँ।

इसकी इनकवायरी जो पहले कराई गयी थी वह इस अस्पताल के डाक्टरों ने नहीं की। जिस डाक्टर ने की उसका नाम है एयर कमोडोर डा० धर्म राज—

एक माननीय सदस्य : धर्म राज।

श्री राज नारायण : मैं ऐसा समझता हूँ कि जो यहां बुजुर्ग सम्मानित सदस्य है वे कम से कम बात का सुनने और इसको मजाक में उड़ायेंगे तो इसकी गम्भीरता नष्ट हो जाएगी। एक जज का लड़का है। उसका एक्सीडेंट होता है। उसको पौने बारह बजे अस्पताल में दाखिल किया जाता है और उसके बाद दूसरे दिन उसकी मृत्यु हो जाती है। इस पर—जब सदन में चर्चा हो रही है तब हल्के तौर से बात नहीं होनी चाहिये।

डा० धर्म राज की रिपोर्ट हमारे सामने है। उनकी रिपोर्ट को हमने अच्छी तरह से पढ़ा है लेकिन उस रिपोर्ट से मुझे संतोष नहीं हुआ। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में पूर्णतया इस बात को कह दिया है कि जितनी भी उचित व्यवस्था की जा सकती थी बचाने के लिए की गई। उन्होंने यह भी कह दिया है कि कोई भी ऐसी नेग्लिजेंस आफ ड्यूटी नहीं हुई है। मगर मेरी पर्सनल जानकारी में यह बात है कि जब हमने जज साहब को बुलाया और उनके पास हमने वह कागज देखा जिस पर अस्पताल के डाक्टर ने यह लिखा था कि इस नम्बर

का ट्यूब ले आइये, 34 नम्बर का। तो 34 नम्बर के अगर ट्यूब की जरूरत थी तो डाक्टर को पहले ही बताना चाहिए था। उस नम्बर के ट्यूब को 8 बजे लिखने की क्या जरूरत थी? उसी के साथ साथ अगर बल्ड देने की जरूरत थी तो उनको पहले ही कहना चाहिए था। तीसरे टेलीफोन पर मुझे यह कहा गया कि जिस ग्रुप के खून की जरूरत थी उस ग्रुप का खून नहीं मिलता था। मगर मुझे बाद में मालूम हुआ कि जो लड़का मरा था उसके छोटे भाई और उसकी माँ, दोनों का रक्त उसी ग्रुप का था वह दोनों वहाँ मौजूद थे। मान लीजिए खून के निकलने में देर होती तो खून निकाला जा सकता था। मगर खून देने की आवश्यकता होती तो दिया जा सकता था। यह सारे तथ्य हमारे सामने आये। इस के बाद कल हमारे पास जज साहब खुद आये और आज उनका एक बहुत लम्बा चौड़ा खत भी आया है जिसमें उन्होंने ऐसी बातें लिखी हैं जिनकी जांच कराना एक्सपर्ट के जरिए हमारे लिए जरूरी हो गया है। इसीलिए मैं माननीय कंवर लाल गुप्त जी और सदन के सभी सम्मानित सदस्यों से कहना चाहता हूँ कि जो पहली इनकवायरी हुई डा० धर्मराज की, उससे मुझे संतोष नहीं है। अब हम फिर पूरी इनकवायरी और अच्छे एक्सपर्ट को रख कर के करवायेंगे।

MR. SPEAKER: If I have understood the question of the hon. Member correctly, he wants to know whether you will have an expert always in the emergency department and also have telephone facilities there.

श्री राज नारायण : माननीय कंवर लाल गुप्त ने जो बात कही है उस बात को हमने बहुत ध्यान से सुना है। केवल इन्हीं की यह शिकायत नहीं है, यह तो उस दिन की शिकायत बता रहे हैं। अभी इस सदन में जब मैं आया तो आते ही इस दरवाजे पर मुझे दो माननीय संसद सदस्य मिले, वह कल की हालत बता रहे थे कि जब वह इमरजेंसी में गये तो वहाँ

की वयनीय स्थिति थी। तो मैं इस बात की गम्भीरता को लेता हूँ कि इमरजेंसी में वही कैसेज आते हैं जो गम्भीर और इमरजेंट कैसेज होते हैं इसलिए वहाँ पर अच्छे, सुयोग्य बढ़िया डाक्टर को नियुक्त रहना चाहिए, ऐसा नहीं कि टालू मिक्कर पिला दे, या किसी एक मामूली आदमी को वहाँ रख दें और फर्ज भ्रवा कर दें कि हमने डाक्टर को रख दिया। इमरजेंसी के माने तात्कालिकता है, यानी इस रोगी को तत्काल दवा की जरूरत है। और अगर उसके लिए अच्छे और एक्सपर्ट डाक्टर नहीं रहेंगे तो ठीक से दवा नहीं कर पायेंगे, मैं इस बात को मानता हूँ। इसलिए वहाँ के जो सुपरिन्टेन्डेंट हैं, जब इस सदन के कार्यभार से भ्राज मैं मुक्त होऊंगा तो उनको कार्यालय में बुलाया जाएगा। इसलिए मैं इस प्रश्न को गम्भीरता के साथ ले रहा हूँ और सुपरिन्टेन्डेंट, विलिंगडन हस्पताल और अपने सचिव को भी बुलायेंगे और उनसे विचार विमर्श करूंगा। वहाँ की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए मैं भी इस मत का हूँ। अब तक जिस ढंग की पिछले शासन में व्यवस्था चलती रही है उस व्यवस्था को हम चलने नहीं देंगे चाहे किसी को भेजना पड़े, किसी को निकालना पड़े। इस मामले को इस की गम्भीरता की दृष्टि से देखा जाएगा और चाहे इसके लिए किसी को भी वहाँ से हटाना पड़े। अगर इस मामले को यहीं पर नहीं छोड़ा जाएगा।

श्री कंबर लाल गुप्त : मंत्री महोदय को याद होगा क्योंकि वह भी थे और मैं भी था जब डा० राम मनोहर लोहिया को वहाँ पर दाखिल किया गया और एक बड़ी भारी शिकायत थी। एक तो यह कहना था कि उनको मार दिया गया और दूसरी तरफ यह कहा गया कि डाक्टरों ने किमिनल नेस्लीजेंस की। उसकी जांच अभी तक नहीं हुई है। पहली बात को न भी माना जायें, लेकिन किमिनल नेस्लीजेंस जरूर हुई।

श्री एक और सेन्सेशनल विसकलोजर करज

चाहता हूँ। अध्यक्ष महोदय, जब बाबू जगजीवन राम ने कांग्रेस से इस्तीफा दिया और जब वह बीमार हो गए तो इंटेलीजेंस और प्राइम मिनिस्टर सैनेटे राट ने यह मालूम किया कि उनके घर के डाक्टर कौन हैं। उस डाक्टर को एप्रोच किया गया और एप्रोच करने के बाद उस डाक्टर से कहा गया कि तुम जगजीवन राम जी को हार्ट पेशेन्ट डिक्लेयर करो। उस डाक्टर ने कहा कि अगर वह हार्ट पेशेन्ट नहीं हैं, तो मैं कैसे हार्ट पेशेन्ट डिक्लेयर कर सकता हूँ? इंटेलीजेंस वालों ने यह कहा कि ई०सी० जी० बदल दीजिए और दूसरा रख दीजिए। डाक्टर ने कहा कि नहीं, अगर हार्ट पेशेन्ट होंगे, तभी कहेंगे। फिर इंटेलीजेंस वालों ने कहा कि उनको विलिंगडन हस्पताल में दाखिल होने का परामर्श दीजिए। डाक्टर ने कहा कि अगर वह हार्ट पेशेन्ट हैं तो चाहे किसी भी हस्पताल में दाखिल हो जायें। उन्होंने कहा कि उनको विलिंगडन हस्पताल में जाने के लिए कहिए,

Because there is a particular doctor and the name of the doctor was also mentioned. Well, does it not mean that there are doctors in that hospital through which they wanted to liquidate the political opponents? If it is so then I am prepared to prove it. I say it with all responsibility. If Mr. Chavan of Mr. Raj Narain want then I am prepared to produce the doctor before them. I say it openly.

अध्यक्ष महोदय, यह बहुत गंभीर सवाल है। क्योंकि विलिंगडन हस्पताल में मैनबर प्राफ पार्लियामेंट और मिनिस्टर जाते हैं। कभी यह सरकार होती है, कभी वह सरकार होती है। वहाँ पर इस तरह के डाक्टर अगर हों तो उनके खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिए।

मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूँ कि क्या वह इस सारे मामले की जांच कराने के लिए तैयार हैं और क्या होम मिनिस्ट्री को इस केस को रेफर करेंगे ताकि जैसी होम मिनिस्ट्री चाहे, वैसी कार्यवाही करे? मैं डाक्टर का नाम बताने को तैयार हूँ।

श्री राज नारायण : मैं श्री कंवर लाल गुप्त को बधाई देता हूँ और उनके सबाल के जवाब में सम्मानित सदस्य को यह जानकारी कराये देता हूँ कि डा० लोहिया के निधन की इन्फार्मरी के लिए डा० गंगवाल और डा० भट्ट, इन दोनों डाक्टरों का नियुक्ति हो गई है। ये लोग कल से अपनी जांच का कार्यवाही शुरू कर देंगे। असल में इन डाक्टरों की करीब एक महीने पहले ही नियुक्ति हो गई थी, लेकिन ये अपने कार्य के निपटान में लगे थे। आज से चौथे दिन इनको फोन कराया तो उन्होंने कहा कि कल से इस काम को शुरू कर देंगे।

जहां तक श्री जगजीवन राम जी की बात रखी गई है, इस सम्बन्ध में इस तरह की घटना हुई, इसकी जानकारी मुझे भी कई मोर्सेज से मिली। मुझे यह जानकारी हुई कि उस समय की रूलिंग पार्टी द्वारा कोशिश की गई कि श्री जगजीवन राम को किस तरह से अयोग्य करार करा दिया जाए, चाहे हाट ट्रबल से या किसी भी तरीके से, ताकि वह इन्क्वाय के दौरान दौरा न कर सकें और कोशिश की गई कि किसी तरीके से उनको विलिंगडन हस्पताल में भर्ती कराया जाए। इस समय सरकार की जिम्मेदारी होने के कारण हम इस बात को एक माननीय सदस्य की तरह नहीं कह सकते थे। लेकिन चूंकि माननीय सदस्य, श्री कंवर लाल गुप्त, ने जो एक जिम्मेदार, बुजुर्ग और पुराने सदस्य है, यह सबाल उठाया है, इस लिए मैं उन्हें बता दूँ कि इस की जानकारी मुझे है, और मैं इस की तह में जाने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं उन डाक्टरों का भी बयान लेना चाहता हूँ, जिन्हें बुला कर ऐसी बातें कही गई कि वे इस तरह से श्री जगजीवन राम के स्वास्थ्य के बारे में रिपोर्ट दें। उन में से कुछ डाक्टर हमें मिला नहीं पा रहे हैं।

श्री उपसेन : डा० डी० एन० शर्मा को बुला लीजिए।

श्री राज नारायण : माननीय सदस्य, श्री उपसेन, उत्तर प्रदेश विधान सभा में विरोधी दल के नेता रह चुके हैं, हमारे साथी रह चुके हैं और इस समय भी साथी हैं। वह सुनें कि मैं क्या कह रहा हूँ।

जिन डाक्टरों से यह बात कही गई, उन्होंने से पूछा जाएगा। डा० डी० एन० शर्मा या डा० भार० एस० तिवारी या डा० उडप्पा को बुला कर क्या करेंगे—बाहर के डाक्टरों को बुला कर क्या करेंगे? हमें सम्बद्ध डाक्टरों से यह जानकारी लेनी होगी कि हमारे पास जो सूचनाएँ आ रही हैं क्या वे सही हैं। मैं यह भी बता दूँ कि यह जानकारी लेने से पहले हमें गृह मंत्री और प्रधान मंत्री से यह निवेदन करना पड़ेगा कि सही बात बताने के कारण उन डाक्टरों का ध्वित न हो उन की जिन्दगी की जिम्मेदारी सरकार को लेनी होगी।

माननीय सदस्य, श्री कंवर लाल गुप्त, ने गृह विभाग द्वारा इस बारे में जांच कराने की बात कही है। जब डा० लोहिया के केस के बारे में डा० गंगवाल और डा० भट्ट की रिपोर्ट आ जाएगी और उस में कुछ बातें निकल आएगी, तो जरूरत पड़ने पर हम गृह विभाग से सी०बी०आई० द्वारा जांच कराने के लिए कहेंगे। लेकिन अगर सभी बातें साफ़ होंगी—इफ़ एन्वीथिंग इज एबाव बोर्ड, तो आगे जांच कराने की क्या जरूरत है? यही बात इस केस के बारे में भी है। जज माहब के लड़के के मरने के बारे में जितनी जानकारी हम वक्त है, उस के अलावा हम यहां के एक्सपर्ट्स, और वाराणसी, लखनऊ, बम्बई और इलाहाबाद के एक्सपर्ट्स, सभी एक्सपर्ट्स, से राय ले लेंगे।

श्री एस० रामगोपाल रेड्डी : ग्राम्प्र प्रदेश के एक्सपर्ट्स की राय भी ले लीजिए।

श्री राज नारायण : अगर माननीय सदस्य ग्राम्प्र प्रदेश के किसी एक्सपर्ट के बारे में बता देंगे, तो हम उन्हें भी बुला कर अवश्य

उन से राय ले लेंगे। हम किसी मामले को दबाना नहीं चाहते। यह जनता पार्टी की सरकार है। जनता पार्टी की सरकार जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता से कोई बात छिपाएगी नहीं।

श्री हरि विष्णु कामत : वाचस्पति महोदय, मुझे पूर्ण विश्वास है कि मंत्री महोदय को राजधानी के इस प्रमुख अस्पताल से पूरी वाकियत है, और वह इसके हालात को भली-भांति जानते हैं। दस वर्ष पहले डा० राम मनोहर लोहिया की दुबल मृत्यु हुई—वह मरी और अनेक सदस्य मुंबालिफ़ पार्टी में थे—और उस समय हम लोगों ने उस की जांच की मांग की थी, लेकिन तत्कालीन सरकार ने वह मांग स्वीकार नहीं की। इसलिए आज मंत्री महोदय का बयान सुन कर संतोष और तसल्ली हुई है।

मंत्री महोदय जानते हैं कि गत दस वर्षों में इस अस्पताल के काम में कोई ज्यादा तरक्की नहीं हुई है। उस के बारे में कई शिकायतें की गई हैं, और पेपर्स में भी प्रकाशित हुई हैं। लेकिन उन की जांच नहीं हुई। इसलिए मैं यह जानना चाहता हूँ कि अभी तक प्रैस में जितनी शिकायतें आई हैं, उनके जवाब जनता के नुमायंदे—जनता पार्टी के नुमायंदे नहीं, जनता के नुमायंदे—सामने आ कर जो शिकायतें पेश करना चाहेंगे, क्या उन की भी जांच होगी या नहीं—इस कमेटी के द्वारा, या किसी दूसरी कमेटी के द्वारा।

यह कहना सही होगा कि अस्पताल के स्टाफ़—नर्सिंग स्टाफ़ और लैबर स्टाफ़—के गुजर-बसर की कन्डीशंस, लिबिंग कन्डीशन्स और वर्किंग कन्डीशन्स, संतोषजनक नहीं हैं।

MR. SPEAKER: Are you not travelling too much outside the question.

SHRI HARI VISHNU KAMATH: No, no. It is very relevant to the question.

1908 LS-2.

आप समझ पाए न? उन के स्टाफ़ के गुजर बसर के हालात, उन की लिबिंग कन्डीशन्स और वर्किंग कन्डीशन्स अच्छी नहीं हैं, वह संतोषजनक नहीं हैं। अगर वह संतोषजनक नहीं हैं तो उस में तरक्की करने का उस को दुरुस्त करने का कोई प्रबन्ध है या नहीं? यह दो क्वेश्चन्स मेरे हैं—एक तो जांच कमेटी का और दूसरा उन की वर्किंग कन्डीशन्स का।

श्री राज नारायण : यह जो कमेटी बनी है डाक्टर गंगवाल और डाक्टर भट्ट की यह तो केवल डा० राम मनोहर लोहिया के केस की जांच करेगी। मैं माननीय कामत जी के इस भाव से और उन की बात से सहमत हूँ कि लगातार उन्होंने दस वर्ष पहले मांग की कि डा० लोहिया की मृत्यु के कारणों की जांच हो। सदन में जिप्टी मिनिस्टर स्वास्थ्य जो थे हमारे सवालों के जवाब में उन्होंने यह उत्तर भी दिया था कि हम जांच कराने के लिए तैयार हैं, मगर दूसरे ही दिन सदन में आ कर उन्होंने उस उत्तर को बदल दिया कि नहीं, मैं अब तैयार नहीं हूँ। जब से इस विभाग में मैं आया, माननीय कामत साहब और दूसरे माननीय सदस्यों की जानकारी के लिए मैं बता दूँ कि हमारी चिन्ता थी क्यों कि मैं काबुल भेजा गया था डा० लोहिया के जरिए खान अब्दुल गफ़्फ़ार खां से मुलाकात करने के लिए और कुछ विशेष संदेश ले कर, वहाँ मुझको तार दिया गया कि आपरेशन बहुत ही अच्छा हुआ और डा० लोहिया बहुत कुशल से हैं। मगर दूसरे दिन जब मैं हवाई जहाज पर चढ़ने जा रहा था तो एम्बेसेडर का भादमी आता है और कहता कि डा० लोहिया की कन्डीशन बहुत ही खराब है, कोई चन्द्रशेखर जी है वहाँ, उन्होंने डम टेलीफोन नम्बर से टेलीफोन किया है, आप फौरन दिल्ली पहुँच जायें। हम ने नम्बर समझ लिया, वह हमारी पार्टी का नम्बर था, चन्द्रशेखर नाम के व्यक्ति हमारे कार्यालय में थे। तब फौरन हम ने वह स्थान छोड़ दिया। सरकारी जहाज जो आता था रुटिन में वह चला गया था लेकिन

एरियाना का एक जहाज आता था, उस से मैं ड्यूता फिरता साढ़े सात बजे शाम यहां पर आ गया। तब से 2 तारीख से ले कर 12 तारीख तक लगातार बीबीस बंटे मैं बहां रहता था। लगातार मुझको बहां पर यह कहा गया था कि किस ने आपरेशन किया और सदन में जब बाबू सत्यनारायण सिंह ने जवाब दिया तो उन्होंने दो डाक्टरों का नाम ले लिया। उन्होंने कहा कि डाक्टर दरबारी ने आपरेशन किया मगर अस्पताल में हम लोग थे तो हम से कहा जाता था कि डा० पाठक में आपरेशन किया। फिर जब हम ने उन से पूछा कि हम को तो बराबर कहा गया कि डाक्टर पाठक ने आपरेशन किया तो उन्होंने कहा कि दोनों ने किया। यह प्रोसीडिन्स में है। इस प्रोसीडिन्स को देखा लिया जाय।

अब सवाल आ गया यह कि हम इस की जांच कैसे करें? सारे कागजात कहां हैं? हमारी गवाही भी हुई है। जो बम्बई के जसलोक अस्पताल के बड़े डाक्टर हैं शांति भाई जी, उन के सामने हमारी गवाही भी हुई थी और लोगों की गवाही भी हुई थी। यहां तक कहा गया था कि कैमर, हार्ट अटेक, वगैरह—सारी बातें उस समय हुई थीं। उस समय शांति भाई आए, उन्होंने कहा कि घाब खोलो। पूरा घाब उन को खोलने नहीं दिया गया। अतः मैं वह कैसे मरे? मगर जब कोई आदमी किसी काम के पीछे पड़ जाय तो कुछ न कुछ मामला बनता ही है। हमारे पास बम्बई से और पूना से दो विटिडियां आईं कि आप के दफ्तर के बाबू लोग फला कोने में एक बोरे में सारे कागजात छिपा कर रखे हैं, उस बोरे को खुलवाइए, आप को सारे कागजात मिल जाएंगे। हम ने बोरे को खुलवाया। हमारे यहां उस समय डा० वजाज डी०जी० हो गए थे। उस बोरे में सारी चीजें मिल गईं। केस हिस्ट्री, डा० लोहिया की क्या बीमारी थी, उन की बीमारी की हिस्ट्री क्या थी यह सब उस में मिल गया। फिर उस को नोट बना कर हम ने एक एक्सपर्ट को बनारस

हिन्दू यूनिवर्सिटी में भेज दिया। बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के डाक्टर ने उस पर एक नोट तैयार किया कि डा० लोहिया का जब इसका ब्लड प्रेशर था तो क्या आपरेशन करने के पूर्व उस ब्लड प्रेशर को डाउन करने की कोशिश हुई? जब डा० लोहिया को यह बीमारी थी तो क्या इस के ऊपर यह कोशिश हुई? इसलिए यह जल्द ही हो गया कि इस पर कोई जांच कमेटी बैठायी जाय। इसलिए जांच बैठाने के लिए हम लोगों ने फैसला किया और इन दो डाक्टरों की जांच बैठा दी।

इसी तरह से देखा जाय जयप्रकाश जी के बारे में भी जांच बैठायी गयी। जयप्रकाश जी के निधन—जयप्रकाश जी की बीमारी कैसे बढ़ी, जयप्रकाश जी का निधन कराने का प्रयत्न कैसे हुआ, उस पर भी एक जांच बैठायी गई है। पहले एक डा० कोसी थे रिनाउल्ड डाक्टर, वर्ल्ड फेम के... (अवधान)...

MR. SPEAKER: Mr. Minister, the matter is pending before the Commission. You cannot go into it.

श्री राज नरसिंह: अध्यक्ष महोदय, इन्होंने जो पूछा है—उसी का जबाब दे रहा हूं। डा० कोसी को हटा दिया गया है, इस लिये कि जिस दिन वह एन्कवायरी करने गये, उसी दिन अपने लड़के को यहां से साथ लेकर गये और चण्डीगढ़ में उस को जगह मिल गई। इस पर बड़ा हल्ला मचा। हम ने उन से पूछा कि यह बात आप ने पहले क्यों नहीं बतलाई? अब उन को हटा कर एक दूसरी एन्कवायरी कमेटी बैठाई गई है, जो चल रही है। चूंकि अब यह मामला एन्कवायरी में है, इसलिये इस समय मैं उस पर विशेष प्रकाश नहीं डाल सकता।

श्री हरि विष्णु कामत: अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का जबाब नहीं मिला।

MR. SPEAKER: Your question was not relevant. Therefore, he has not answered.

श्री हरि विष्णु कामत : मैंने स्टाफ के गुजर-बसर, उन की बकिंग कण्डीशन्स के बारे में पूछा था

श्री बसंत साठे : हमारे यहाँ मराठी में एक कहावत है—

शुभ बोल रे ना-या

माडवाला लागली आग ।

इन्होंने जयप्रकाश जी के बारे में कहा
(व्यवधान)

श्री हरि विष्णु कामत : मैंने प्रश्न पूछा था कि स्टाफ की गुजर-बसर, लिविंग कण्डीशन्स, बकिंग कण्डीशन्स सन्तोषजनक है या नहीं है ? अगर नहीं है तो उन को सुधारने का कोई प्रयत्न चल रहा है या नहीं ?

It is very relevant Negligence may be due to the dissatisfaction of the staff about their working conditions and living conditions It is a psychological

श्री राज नारायण इस सवाल से इस प्रश्न का सीधा सम्बन्ध नहीं है लेकिन चकि सम्मानित सदस्य कामत जी ने सवाल पूछा है, इसलिये जवाब न दिया गया तो वह उचित नहीं होगा। इस समय अस्पतालों में जो व्यवस्था है चारों क्लास 4 हो, 3 हो, 2 हो या क्लास 1 हो—किसी भी व्यवस्था से मुझे सन्तोष नहीं है। मैं बहुत ही परेशान हूँ। मैं पहले समझता था कि यह विभाग बहुत अच्छा है, इसलिये इसमें आराम से रहूँगा। लेकिन रोज हमारे घर पर घटना हाता है। आज ही सफदरजंग अस्पताल के 10-12 नर्सज, 10-12 डाक्टरज ने सबेरे से हमारे घर को घेर लिया। किसलिये ? उन का कहना है कि हमारे लिये रहने की जगह नहीं है, हम कहा रहे आप हमारे रहने की व्यवस्था कीजिये। तब हम ने अपनी जान बचाने के लिये भाई सिकन्दर बख्त को फोन किया . .

निर्वाण श्रीर आवास तथा पूर्ति श्रीर गुनवास भंभी (श्री सिकन्दर बख्त) : जी हाँ, 10-12 की जगह 1500 बताये।

श्री राज नारायण हम ने इसलिये फोन किया कि किसी तरह से इस समस्या को हल कराये, क्योंकि मकान देने का काम भाई सिकन्दर बख्त का है। मैं अभी भी चाहता हूँ—यहाँ हमारे मंत्री-मंडल के सभी बुधुर्ग सदस्य बैठे हैं, सारा सदन बैठा है—आप इस बात का ख्याल करे कि आप के अस्पतालों के जो डाक्टरज हैं, अगर उन के पास रहने की जगह नहीं होगी, तो डाक्टर ठीक समय पर कैसे पहुँचेंगा, दवा कैसे करेगा ? नर्सज हैं, जिन में बहुत सी सैरिज हैं, बांदीशूद हैं, वे कहा रहेंगी, उन के रहने की व्यवस्था होनी चाहिए। बड़ी-बड़ी गगनचुम्बी अट्टालिकायें बन जायेंगी, सेंटैलाइट बन जायगा, लेकिन डाक्टरों के रहने के लिये मकान नहीं बनेंगे—यह क्या हालत है ?

SHRI BEDABRATA BARUA The hon Minister is the second Minister during this short period of this sitting today who has chosen to blame the past Government for the problems of Management I would like to give this advice to the Janata Party Please tighten up the administration The crime rate is going up Prices are going up The economy is grinding to a halt I am prepared to give the Janata Party more time but they must look into the problems of administration in all its aspects Otherwise, they would have to go much before their time

The conditions in all the government hospitals not only in Willingdon have gone down so much that no poor man is prepared to go to government hospitals He will only go to a private doctor There has been a report in the 'Times of India' about a retired judge whose wife died because an empty oxygen cylinder was brought at the time of treatment,

although Rs. 900 had been paid in advance for the treatment. So many simple medical facilities are not available in Willingdon. For example, why should not tubes of all sizes be ready in the hospital? These are questions of management. Why is it that in every emergency the hospital finds itself unprepared to meet it? Is there nobody engaged to look after the patients at night or to attend to emergency cases or is that those who are paid are not doing their work? Why is there no discipline and co-ordination between the staff? It is common knowledge that X-ray reports, blood reports etc. are mistakenly given to wrong persons? I myself was a victim because once I was given an X-ray report which showed that I was suffering from pneumonia bronchitis emphysema. I was very much surprised because although it was six years ago, I am still alive! Why is it that these matters of life and death are taken in a routine way? I think the ordinary citizen has a right to demand an explanation and ask the government to look into hospital management as a whole. I want to know whether the minister will get the whole question of hospital management studied thoroughly—they can find out how the missionary hospitals are so well managed—so that such incidents do not take place in the government hospitals?

श्री राज नारायण : श्रीमन्, माननीय सदस्य ने जिन बातों को कहा है, वे बातें करीब करीब ठीक ही हैं। हमारा यह कर्तव्य ही होता है कि अस्पतालों में कोई अव्यवस्था न होने दें और इन सब बातों की जांच-पड़ताल करने के लिए ही हमने एक इन्क्वायरी बैचने की बात की है। जहां जिन दयूब की जरूरत थी, वह दयूब समय पर वहां क्यों नहीं थी? पहले इस का उत्तर दे दिया है। इसलिए अब इस का बड़ा उत्तर देने की जरूरत नहीं है। जितनी बातें सम्मानित सदस्य ने कहीं हैं, वे सभी हमारे दिमाग में हैं, हमारे ध्यान में हैं और उन सब के बारे में जांच करने के लिए

समुचित व्यवस्था करने की आवश्यकता है और उस आवश्यकता की हम पूर्ति करेंगे।

SHRI K. T. KOSALRAM: Yesterday the hon. member replied in Rajya Sabha in Tamil. So, I will put my supplementary in Tamil.

MR. SPEAKER: Under the directions given earlier, regional languages are allowed only during speeches. During Question Hour, no other language except Hindi or English can be used.

SHRI K. T. KOSALRAM: Yesterday, in Rajya Sabha, the hon. minister answered in Tamil. He knows Tamil.

MR. SPEAKER: Mr. Kosalram, what happens in Rajya Sabha is not the concern of this House. This House has laid down the rules. Earlier, rulings have been given that during Question Hour only Hindi and English can be used. During speeches I will arrange for translation.

SHRI K. T. KOSALRAM: Sir, yesterday he answered in Tamil.

MR. SPEAKER: I do not take notice of that.

(Interruptions)

SHRI M. SATYANARAYANA RAO: Sir, I am on the panel of Chairmen. You are not allowing me to put any question. I do not know what happens.

MR. SPEAKER: I have allowed your Party. Every single individual cannot say that he is the Party.

SHRI M. SATYANARAYANA RAO: Last time also, three days back when I wanted to put a question, you did not allow me at all. You please allow me to put it now. It is an important question.

MR. SPEAKER: Mr. Satyanarayana Rao, unless the question is important, it would not come to Lok Sabha.

SHRI DINEN BHATTACHARYA: What is the procedure you are adopting? Please let me know.

SHRI M. SATYANARAYANA RAO: Mr. Speaker, Sir, I have never put a supplementary and you are allowing the same people to always put some questions whether relevant or irrelevant. I have never put a question when I saw that it was not relevant, because I have got some bitter experience. I have got some grievance also. That is why I want to seek a clarification from the hon. Minister. You are not allowing me to put the question.

MR. SPEAKER: First of all, I would like to say something. I must give to all Parties a certain time. Mr. Kosalram belongs to your Party. Ever since I took charge I have asked the office to prepare a note for finding out how many people have put questions from each Party on each day. Because yesterday I got a letter from a Janata Party Member that I am only allowing the Congress Party and the other Opposition and not others, I asked the office to prepare a note to find out how many people have put questions from each Party on each day. And if you want, I am going to give you a copy of it so as to show that every Party has been given almost an equal amount of time. Every Member thinks that he is a Party. I cannot help that. Today you must have notice that I have only called people who had not asked a single question before. Whoever stood up for the second time, I have not allowed. Mr. Kosalram has not asked any question. Therefore, I allowed it.

(Interruptions)

SHRI K. SURYANARAYANA: The questions are not evenly distributed according to the Party strength. The questions have no concern with the Party, but they have social concern.

So, I want you to reconsider it and allot time accordingly and not give opportunity only to Members to whom it is relevant and on local considerations, but not on Party basis.

MR. SPEAKER: You are right. Whenever a question relates to a particular State, I allow the people of that State. The other day the coconut question came and I allowed only the Kerala people and people of other places where it is grown. That also I have done. Whenever a matter concerns Tamil Nadu, I choose only Tamil Nadu people. Whenever a Harijan question or a Scheduled Castes question comes, I try to pick up as many Harijans as possible.

(Interruptions)

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Sir, you called me and....

MR. SPEAKER: This is not the question.

CHOWDHRY BALBIR SINGH: Sir, I am on a point of order.

MR. SPEAKER: Not now. I will hear your point of order. We are only discussing how to put the question. That is all.

बौधरी बलबीर सिंह । सुन लें मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । व्यवस्था अब खराब कर रहे हैं और सुनने बाद में ? सुनने के बाद आप कह सकते हैं कि गलत है या सही । उससे पहले आप नहीं कह सकते हैं कि गलत है ।

MR. SPEAKER: There is no point of order. Please sit down.

CHOWDHRY BALBIR SINGH: *

MR. SPEAKER: This will not go on record. I have over-ruled it.

CHOWDHRY BALBIR SINGH: No, no. You cannot over-rule it. आप व्यवस्था का प्रश्न सुनने से पहले कैसे अवरुद्ध कर सकते हैं ?

MR. SPEAKER: He is explaining the position. He is not putting any question at all.

CHOWDHRY BALBIR SINGH: *

MR. SPEAKER: This is not to be recorded.

SHRI A. BALA PAJANOR: Regarding the allotment of time, you said, Sir, that it was done party-wise. But I must say that I feel that only lung-power and not brain-power can prevail here. It was the sad experience of our Party, when the Lokpal Bill was introduced. My party-men had given their names.

MR. SPEAKER: We are on questions now.

SHRI A. BALA PAJANOR: Not only on that issue. I submitted names as the leader of my party. My people had given their names. They waited. They were not called. Whenever you are here, the third preference is given to our party. On three occasions, we were not given chance to take part in the discussions on that bill. I am grateful to you. I want to be heard. I can also bring 20 Members and can shout. But I don't believe in that kind of democracy and of parliamentary procedure. I have been ultimately told that I am not submitting my party's proposals to you. I humbly submit, Sir, that I think you have to control. Your job is to control. You should give us an opportunity during which we can express our views. I am thankful to you for making those observations. I hope you will follow them.

SHRI C. K. CHANDRAPAN: I have to make a suggestion. Instead of giving a ruling on this, my submission is that you should call a meeting of the Rules Committee. Let us have a discussion there. (Interruptions) A question relating to Kerala or to Harijans does not pertain only to people from

Kerala or only to Harijans. I am interested; I am not a Harijan, but you cannot shut me out from expressing my views.

MR. SPEAKER: You have not heard me properly. I have used the word 'mainly'; but other persons will also be given the chance. But mainly, the interested persons should be given a better chance.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Arising out of what the hon. Minister stated here this morning, and the fact that he has admitted that he has received a number of letters with regard to the effort made for Babu Jagjivan Ram's confinement in the hospital, I want to seek some clarifications. Is it, or is it not a fact that when Babu Jagjivan Ram fell ill, had a little uneasiness while touring in Punjab in the first week of March, i.e., before the elections (Interruptions)—of course about a fortnight before the elections—a telephone call went (not one but 3 telephone calls went) from officials, including a Joint Secretary in the Ministry of Health. I think the man's name is Bakshi. The telephone call said to a doctor—I think it is Dr. Caroli—"Confine him to bed, to immobilize him for a fortnight, and tell him; you are suffering from heart trouble." Is it a fact or not? Is it also not a fact that Dr. Caroli and some other doctors refused to oblige that officer who was acting on behalf of the Prime Minister and on her instructions?

श्री राज नारायण : श्रीमन्, माननीय सदस्य ने जो प्रश्न अभी यहाँ पूछा है, किसी समय किसी विषय पर बोलते समय किसी विधेयक पर इन्होंने अपने इस जज्ञबात का इजहार किया था और उन्होंने उसी हमारे सेक्रेटरी का नाम भी लिया था। हमने बाकायदा इनके प्रापण की कापी मंगवा ली है और मंगवा कर के उसकी इन्वायरी हम करवा रहे हैं। आज भी कह दिया है, आज भी उसकी

*Not recorded.

इनकायरी के लिये हम बचन देते हैं कि जांच पड़ताल करेंगे। मगर आप जानते हैं कि जनता पार्टी की सरकार है बिना किसी की पूरी जांच किये किसी को दंडित नहीं किया जा सकता।

SHRI S. KUNDU: The hon. Health Minister has solved most of the problems arising out of this question in his answer. But there is one point which I want to raise in this Short Notice Question. Perhaps, the Health Minister is aware that in the Safdarjung Hospital one child was declared dead even though it had not actually died. It was found from the mortuary that the child was not dead. It appeared in almost all the newspapers in Delhi. I would like to know whether the hon. Health Minister will make an enquiry into this.

MR. SPEAKER: Is it something relating to the Willingdon Hospital?

SHRI S. KUNDU: It relates to the Safdarjung Hospital.

MR. SPEAKER: The question is about the Willingdon Hospital.

SHRI S. KUNDU: Almost everything in the world has come in this question. This is very much pertinent and relevant. He should make an enquiry into this.

श्री राज नारायण: नहीं, नहीं नोटिस की जरूरत नहीं है।

माननीय सदस्य ने जो बात कही है, वह सब अखबारों में आ चुकी है। इसकी मैंने जानकारी करा ली है, यह अवांमन का केस था। माननीय सदस्य जो कुछ और जानकारी कराना चाहते हैं, उसकी और जानकारी भी करा ली जायेगी।

श्री उपसैन: माननीय स्वास्थ्य मंत्री ने अभी सदन को आश्वासन दिया है कि नेशनल ईस्टर्न के संवाददाता की जो मृत्यु हस्पताल

में हो गई, और डा० लोहिया की मृत्यु के बारे में जो वह जांच करा रहे हैं, तो क्या वह इस सदन को यह भी आश्वासन कराने के लिये तैयार हैं कि वह जांच जल्दी ही पूरी हो जायेगी और वह उस जांच का प्रतिवेदन सदन के पटल पर रखेंगे, ताकि सदस्य उस पर विचार कर सकें?

श्री राज नारायण: बधाशक्य, नियमतः जो कुछ भी होगा वह मैं कहंगा।

श्री एम० सत्यनारायण राव: अभी मंत्री महोदय ने यह कहा कि उनके मंत्री बनने के बाद बिलिंगडन हस्पताल में बहुत अच्छा इम्प्रूवमेंट हुआ है। (अवबचान) मेरा तजुर्बा है, मैं आपको वह बताना चाहता हूँ। 10 रोज पहले मेरी बच्ची बीमार हो गई, मैं उसको दवाई दिलाने के लिये हस्पताल ले गया। वहां डाक्टर और नर्सों ने बिल्कुल कोई जवाब नहीं दिया, कोई रिस्पॉन्सिबिलिटी उन्होंने नहीं दिखाई। इसी तरह से हमारे यहां के रिपोर्टर भी पहले गये थे, उनका बेटा जब बीमार था, उनकी भी वही हालत हो रही थी। उस समय मैंने मेम्बर पार्लियामेंट बताकर प्रिविलेज बताना ठीक नहीं समझा, इसलिये प्रेस नहीं किया कि मैं एम० पी० हूँ। उसके अलावा जो गरीब लोग थे, उनमें एक की बच्ची बीमार हो रही थी, एकचुअली मैं हालत उसकी देख रहा था, मैं बताना चाहता था, लेकिन कोई फायदा मैंने नहीं समझा कि उसको बताया जाये। उसने कहा कि मेरी बच्ची मर रही है, डाक्टर और नर्स आते नहीं हैं, आप एम० पी० है, आप रिस्पेक्ट कीजिये। मैंने कहा कि कम-से-कम मेरी बच्ची को नहीं, तो उस गरीब की बच्ची जो मर रही है, उसको देख लें, लेकिन कोई देखता नहीं था। मैं समझता हूँ कि वह मर गई। यह हालत है वहां।

दूसरी चीज मैं यह बताना चाहता हूँ कि वहां के एमजेंसी वार्ड में, जैसा कि श्री कंवरलाल गुप्त ने बताया है, इतनी गन्दगी और गलीज है कि कुछ कह नहीं सकते।

मंत्री महोदय वहां स्वयं जाकर देखें। उन्होंने वहां के डाक्टर और डायरेक्टर्स को अपने आफिस में बुलाने की बात कही, लेकिन मैं उनसे रिक्वैस्ट करता हूं कि वह खुद अभी वहां जायें और देखें कि एमर्जेंसी वार्ड में क्या हालत है। वहां इतनी बंदबू, पेशाब और पाखाने की रहती है, कि दो मिनट वहां नहीं रह सकते। वहां पर बैठने के लिये न बेंच हैं, न कुर्सी है और इतना गलीब पड़ा हुआ है कि हद नहीं। इसके मुतालिक आप क्या करने वाले हैं? मेरा कहना है कि आप खुद जाइये और देखिये कि यह सही है या नहीं।

श्री राज नारायण : मुझे माननीय सदस्य के जवाब का तो सुन कर बड़ी खुशी हुई। आज जो विरोधी पक्ष है, कम से कम उसे यह एहसास तो होने लगा है कि हमारी जनता पर कितनी मुसीबतें आ रही हैं।

माननीय सदस्य वहां गये, और उन्होंने अपनी आंखों से इन बातों को देखा। तो वह कम से कम इस गरीब आदमी को एक छोटी सी चिट लिख कर भेज देते; मैं इस सदन में भ्रक्तर आता रहता हूं, मुझे बता देते। माननीय सदस्य कह रहे हैं कि मैं खुद वहां जाऊं। मैं भ्रक्तर वैलिंगडन अस्पताल में जाता रहता हूं, लोगों से मिलता रहता हूं और एमर्जेंसी वार्ड में भी गया हूं। उन्होंने मुझे अभी वहां जाने के लिए कहा है। सदन का नियम है कि सदन के कार्य को छोड़ कर किसी दूसरे कार्य को प्रायर्टी नहीं दी जा सकती है। मैं सदन के कार्य में भगा हुआ हूं। इस से खाली होते ही मैं जरूर वहां जाऊंगा।

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

भारत जनसंख्या परियोजना योजना

* 774. श्री राम भारी शास्त्री : क्या स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उत्तर प्रदेश सरकार ने केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित भारत जनसंख्या परियोजना योजना के अंतर्गत देवरिया और गाजीपुर जिलों को चुना है, और योजना को त्वरित कार्यान्वित करने के लिये अनुरोध किया है; और

(ख) यदि हां, तो योजना की मुख्य बातें क्या हैं और इसे कार्यान्वित करने में विलम्ब होने के क्या कारण हैं?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राज नारायण) : (क) और (ख). दूसरी भारत जनसंख्या परियोजना के बारे में विश्व बैंक के साथ बातचीत चल रही है। परियोजना में शामिल किए जाने वाले जिलों के चयन को अभी अन्तिम रूप दिया जाता है। इस परियोजना के अधीन परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत जिन-जिन गतिविधियों/योजनाओं को लाया जाना है, उन्हें भी विश्व बैंक के प्राधिकारियों के साथ अभी तय करना है। इसलिए परियोजना को कार्यान्वित करने में देरी होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

Publication of Telephone directories for Exchanges in big cities

* 776. SHRI MRITUNJAY PRASAD VARMA: Will the Minister of COMMUNICATIONS be pleased to state:

(a) for how many years the Telephone Directories for exchanges in most big cities have not been published, brought up to date and telephone subscribers are made to suffer the harassment of enquiring the numbers of new connections, new numbers for old numbers when a new exchange is